गांधी और साउथ अफ्रीका

काफी ऊँचाई पर यह ठंडी सी जगह है, पीटर और मरिट्ज को पसन्द आयी। यहां जमीन का एक टुकड़ा लेकर बसना चाहते थे। लेकिन आसपास रहने वाले जुलु कबीलों की मर्जी के बगैर वहां रहा नही जा सकता था।

पीट रेटिफ और गर्ट मरिट्ज़ ने जुलु चीफ से मिलने का निर्णय किया। सन्देश भेजा तो अनुमति मिल गयी। उन्हें भोज पर बुलाया गया। बात सुनी गई। और काट डाला गया।

यह 1830 के आसपास की बात है। इस जगह पर बसी बस्ती पीटरमारितजबर्ग के नाम से जानी गयी थी। एक रेल लाइन यहां से बनी, और गुजरी।

कोई 63 साल बाद एक ठंडी रात को एक ट्रेन, इस ट्रेक से गुजर रही रही थी।

.....

फर्स्ट क्लास केबिन में एक भारतीय वकील बैठा था। उस केबिन में एक अंग्रेज की सीट थी। काले आदमी के साथ वह भला कैसे बैठ सकता था। सो टीटी को बुला लाया।

टीटी ने उस काले को समझाने की कोशिश की। लेकिन काला आदमी तो बड़ी बड़ी बातें करने लगा। कहा कि उसमे इंगलैंड से बैरिस्टरी पास की है। बार का मेम्बर है। उसके पास फर्स्ट क्लास का वैलिड टिकट है। वह कतई थर्ड क्लास में जाकर न बैठेगा।

दुबले पतले इस काले आदमी की हिमाकत देखकर टीटी के गुस्से का ठिकाना न रहा। ट्रेन इस वक्त पहाड़ चढ़ रही रही थी। पीटर मारितजबर्ग स्टेशन सामने था। गाड़ी ठहरी।

तो टीटी ने उस काले आदमी को ट्रेन से उतार दिया। सामान फेंक दिया। ट्रेन चल पड़ी।

.....

मोहनदास करमचंद गांधी ट्रेन को गुजरते देखते रहे। फिर सामान समेटकर आगे बड़े। वह अपमान, वह ठंडी रात, वह वीरान स्टेशन, वेटिंग रूम..

मैं अपनी जान के लिए डरा हुआ था। उस अंधेरे वेटिंग रूम में गया। वहां एक गोरा भी था। मैं उससे डरा हुआ था। मेरा कर्तव्य क्या है?? मैंने पूछा अपने आपसे??

क्या मैं भारत लौट जाऊं?? या मैं ईश्वर को अपने साथ, अपना सहायक जानकर आगे बढ़ूँ, और सामना करूं उसका जो किस्मत ने मेरे ललाट पर लिखा है?

मेरी सक्रिय अहिंसा, असहयोग का उस दिन जन्म हुआ

.....

7 जून 1893 की रात एक नए आदमी का जन्म हुआ। महात्मा गांधी ने आगे कभी लिखा- आई वाज बोर्न इन इंडिया, बट आई वाज मेड इन साउथ अफ्रीका।

वह दौर था, जब ब्रिटेन के राज में सूरज नही डूबता था। भारत उस राज का क्राउन ज्वेल था। काले वकील ने वह ताज उतार लिया। 15 अगस्त 1947 में वह कहानी पूरी हुई, जिसकी शुरुआत 7 जून 1893 को पीटर मारितजबर्ग स्टेशन से हुई थी।

.....

वेटिंग रूम अब एक म्यूजियम है। गांधी की महक वहां ताजी है। उस मगरूर गोरे, उस घमंडी टिकट चेकर को कोई नही जानता।

लेकिन ट्रेन से उतारे गए उस काले वकील को दुनिया सलाम करती है। उनकी मूर्ति पीटर मारितजबर्ग के स्टेशन पर आज भी लगी है।

जब उनकी जन्मभूमि से उनका नाम मिटाने की कोशिशें चल रही है।

चुटकुला हरियाणवी / डॉक्टर दहिया

मास्टर जी --- कौनसी किताब थाम नै ज्यादा मदद करै सै ?
रमलू -- साच बोलूँ अक झूठ ?
मास्टर जी --साच बोल बेटा।
रमलू --- मेरे बाबू की चैक बुक।

मोदी के अग्निवीर यानी सेना में भर्ती से तौबा

चंद्रशेखर जोशी

ऐसी तस्वीरें चार दिन पहले आम थीं। आज सड़कें सूनी हैं, बंजर खेत-जंगलों में बने मैदानों में भी कोई दौड़ता युवा नहीं है। प्रशिक्षण एकेडमी का गेट भी नहीं खुला है।

...रोज तड़के सेना भर्ती की तैयारी के लिए देश के लाखों युवक ऐसे ही हर सड़क-मैदान में तैयारी करते थे। केंद्र सरकार के नए नियमों के बाद अब अधिकतर युवाओं ने सेना में भर्ती का इरादा छोड़ दिया है।

...हमारे यहां के एक बीए में पढने वाले 19 साल के सुरेंद्र ने कहा कि वह हाईस्कूल से भर्ती की तैयारी कर रहा था, अब उसे सेना में जाकर जीवन बर्बाद नहीं करना है। सुरेंद्र अब किसी होटल में नौकरी करेगा या किसी कंपनी में मजदूर बन जाएगा या फिर अपने बंजर खेतों से भोजन लायक उपज पैदा करेगा। उसके लिए सेना में चार साल खपने के बाद खाली हाथ घर लौटना संभव न होगा।

...गरीब-मध्यम घरों के युवाओं को भर्ती का सपना दिखाकर कई रिटायर्ड सेना के अधिकारियों ने शहरों में एकेडमी खोली हैं। कुछ समय यह लोग मुफ्त में प्रशिक्षण देते थे, बाद में फीस वसूलनी शुरू की। कई एकेडमी संचालकों ने हास्टल भी बनाए हैं। इनमें गरीब घरों के युवकों से अच्छा खासा धन लिया जाता है। करीब एक सप्ताह से एकेडमी में आने वाले युवाओं की संख्या कम होने लगी। पिछले दो दिनों में हास्टलों में रहने वाले अधिकतर युवक अपने घरों को जा चुके हैं। शहर की कई एकेडमी अब खाली हैं।

...उत्तराखंड के पर्वतीय इलाकों के युवाओं को सैनिक, जीडी में भर्ती करने के बाद सीधे जम्मू-कश्मीर, नागालैंड आदि तनावग्रस्त क्षेत्रों में भेज दिया जाता था। हालांकि इससे पहले उनकी एक साल की ट्रेनिंग होती थी, लेकिन अब भर्ती के बाद चार साल की नौकरी में वह हथियारों का नाम भी याद नहीं कर पाएंगे। उन्हें सीधे सीमा क्षेत्रों में भेज दिया जाएगा।

...समझदार परिजनों ने भी बच्चे के सेना में जाकर जान गंवाने के इरादों पर विराम लगा दिया है। उनका कहना है कि खेत छोटे ही सही पर पेट भरने की उपज पैदा कर लेंगे। सेना की ऐसी हालत होने के बाद परिजन कह रहे हैं कि हम भूखे जान दे देंगे लेकिन बच्चे को फर्जी शहीद का दर्जा देना कबूल नहीं करेंगे।

...सेना में भर्ती होने वाले सभी युवा गरीब घरों के होते हैं। इन युवाओं के जीवन की बर्बादी का सरकारी फरमान किसी को मंजूर नहीं। गरीबों का यह दुख किसी टीवी चैनल या अखबारों का हिस्सा नहीं बनेगा। सभी की लगभग एक ही पुकार है।

..नेता अपने बच्चों को बनाएं अग्निवीर, उन्हीं को अग्नि में झोंकें, उस अग्नि की तपिश से पाएं सत्ता.

ग्रुप डी संघर्ष विकास समिति का कर्मचारी महासंघ में विलय

हरियाणा कर्मचारी महासंघ के प्रदेश महासचिव सुनील खटाना की अध्यक्षता में यूनियन कार्यालय 11 केवी स्विटचिंग सब स्टेशन हार्डवेयर पर ग्रुप डी संघर्ष विकास समिति रजिस्ट्रेशन नंबर-1209 यूनियन के पदाधिकारी साथियों ने हरियाणा कर्मचारी महासंघ से नाता जोड़ महासंघ की सदस्यता ग्रहण कर ली है । आज से बल्कि अभी से ग्रुप डी संघर्ष विकास समिति जिसका रजिस्ट्रेशन संख्या नम्बर-1209 वह सभी कर्मचारी यूनियन अब हरियाणा कर्मचारी महासंघ से संबंधित कहलाएगी और भविष्य में जहाँ भी हरियाणा कर्मचारी महासंघ जिस भी मंच पर आवश्यकता होगी हरियाणा कर्मचारी महासंघ ग्रुप डी संघर्ष समिति कर्मचारी यूनियन के साथ पूर्ण सहयोग करेगा और एक मजबूत टीम की तरह काम करेगा ।

इस अवसर पर हरियाणा कर्मचारी महासंघ के प्रदेश महासचिव श्री सुनील खटाना ने सभी कर्मचारी पदाधिकारी साथियों को पूर्णता आश्वस्त किया कि हरियाणा कर्मचारी महासंघ प्रदेश में ढाई लाख कर्मचारियों का मजबूती के साथ नेतृत्व करता है और समय-समय पर कर्मचारियों की आवाज को सरकार के समक्ष उठाता है और आगे भी उठाता रहेगा। बहुत जल्द प्रदेश के मुख्यमंत्री के साथ मीटिंग के माध्यम से लंबे समय से कर्मचारियों की लंबित मांगों पर बातचीत कर उन्हें लागू करवाने का काम करेंगे। आने वाला समय संघर्ष का है सरकार से कर्मचारी वर्ग को काफी उम्मीदें थी मगर एक लंबा समय बीत जाने के बावजूद कर्मचारियों की समस्याएं जस की तस बनी हुई है। जिनको सरकार समय रहते हल करने का कार्य करें अन्यथा आने वाला समय आंदोलनों का होगा ।

आज कर्मचारी वर्ग के सामने मुख्य रूप से पुरानी पेंशन बहाली, कच्चे कर्मचारियों को पक्का करना, ग्रुप डी में लगे हजारों कर्मचारियों का प्रमोशन के कोटे को बढ़ाना व सर्विस के टाइम पीरियड को कम किया जाए जी अब पाँच साल है इसे तीन साल किया जाए, समान काम के लिए समान वेतन जोखिम भत्ता, कैशलेस चिकित्सा सुविधा, हरियाणा कौशल रोजगार निगम के स्थान पर स्थाई भर्ती शर्त रहित करना, एक्स ग्रेशिया, पॉलिसी ऑनलाइन तबादला नीति रद्द करना, खाली पदों के अनुरूप भर्ती प्रमोशन इत्यादि अनेक लंबित मांगों को लागू करना।

इस अवसर पर मुख्यरूप से ग्रुप डी संघर्ष विकास समिति के महासचिव विकास यादव, मन्नू अशीवाल वरिष्ठ उपप्रधान, आशीष गुड़गांव जिला प्रधान सहित राज्यसचिव सतीश छाबड़ी, सहसचिव सन्तराम लाम्बा, महासंघ के जिला प्रधान कर्मवीर यादव व मीडिया प्रभारी लेखराज चौधरी, बिजली विभाग से कर्मचारी प्रधान विनोद शर्मा, सुनील चौहान, राजबीर, सुरेन्दर, धीरसिंह, मुकेश, सियाराम, अनिल आदि कर्मचारी नेताओं ने अपने विचार रखे ।